— ० —

(ख) प्रत्यक्षीकरणकर्ता - निर्धारक (Perceiver Determinants)

व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण अथवा धारणा निर्माण (impression formation) पर कुछ ऐसे कारकों का प्रभाव पड़ता है जिनका सम्बंध व्यक्ति - प्रत्यक्षीकरण करने वाले व्यक्ति से होता है। ऐसे कारकों को व्यक्ति-प्रत्यक्षीकरणकर्ता निर्धारक कहते हैं। समाजीकरण (socialization), पारस्परिक सम्बंधों (inter-personal relationship, रूढ़ाकृतियों (stereotypes) तथा व्यक्तिगत अनुभवों का प्रभाव एक विशेष प्रकार के संज्ञानात्मक संरचना तथा संज्ञानात्मक प्रतिरूपों (cognitive patterns) का निर्माण होता है, जो व्यक्ति इन्हीं चरों से प्रभावित होकर किसी दूसरे व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण करता है। उसके सम्बंध में कोई धारणा (impression या निर्णय (judgement) करता है। इसलिए एक ही उत्तेजना या वह लक्ष्य - व्यक्ति (~~[illegible]~~) (target person) का प्रत्यक्षीकरण भिन्न-2 निरीक्षक (observers) भिन्न-2 रूपों में करता है तथा अलग-2 धारणा बना लेते हैं। जैसे:- एक ही महिला को कोई माता के रूप में,

कोई बहन के रूप में, कोई पत्नी के रूप में, कोई बेटी के रूप में कोई प्रेमिका (beloved) के रूप में देखता है। प्रत्यक्षीकरण की इस विभिन्नता का कारण वह लक्ष्य-व्यक्ति (महिला) नहीं है, बल्कि प्रत्यक्षीकरण करने वाले व्यक्ति (Perceiver) है। प्रत्यक्षीकरणकर्ता निर्धारकों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

1. संज्ञानात्मक योग्यता (cognitive ability).
2. संज्ञानात्मक प्रणाली (cognitive style).
3. संज्ञानात्मक जटिलता (cognitive complexity).
4. पूर्वधारणा (Prejudice).
5. रूढ़िवाद तथा उदारवाद (conservatism & Liberalism).
6. सत्तावादी शीलगुण (Authoritation traits).
7. यौन भिन्नता (sex difference)
8. आयु (Age)

(vi) संज्ञानात्मक संरचना (cognitive structure)

व्यक्ति-प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों में संरचना संरचना भी काफी महत्वपूर्ण है। ऐसी संरचनाओं में परिवेशगत प्रभाव (halo effect) अव्यक्त व्यक्तित्व (implicit personality तथा स्थिराकृति (Streotype) आदि काफी महत्वपूर्ण हैं:—

1. परिवेश प्रभाव (Hallo effect): ⇒ इसका अर्थ व्यक्ति की वह प्रवृत्ति है, जिसके कारण वह दूसरे व्यक्तियों को किसी विशिष्ट शीलगुण के आधार पर उच्च या निम्न श्रेणी में रखता है। जैसे:- जिस व्यक्ति के प्रति हमारी मनोवृत्ति अनुकूल होती है, उसे हम वांछित शीलगुणों में उच्च तथा अवांछित शीलगुणों में निम्न समझते हैं। ऐसी स्थिति में हमारी धारणा या निर्णय वाचक बन जाता है। यह अशुद्धि (error) प्रायः ऐसे शीलगुणों के मूल्यांकन में अधिक होती है, जो अपरिचित होते हैं, जो चरित्र से सम्बन्धित होते हैं, तथा जिन्हें आसानी से निरीक्षण करना या परिभाषित करना संभव नहीं होता है।

2. विरोध तथा समानता अशुद्धियाँ (Contrast & Similarity error): विरोध अशुद्धि का अर्थ यह है कि कुछ लोग भिन्न ढंग से अपने-आप का मूल्यांकन करते हैं, ठीक इसके विपरीत ढंग से दूसरों का मूल्यांकन करते हैं। दूसरी ओर समानता अशुद्धि का अर्थ यह है कि कुछ लोग दूसरों का मूल्यांकन उसी ढंग से करते हैं, जिस ढंग से अपना मूल्यांकन करते हैं। इन दोनों अवस्थाओं में प्रत्यक्षीकरणकर्ता (Perceiver) या श्रेणीकर्ता (rater) का निर्णय पक्षपाती हो जाता है।

3. केन्द्रिय प्रवृत्ति अशुद्धि (Central tendency error): कुछ लोग दूसरों के प्रति अति निर्णय (extreme judgement) करने से बचने की प्रवृत्ति रखते हैं। वे व्यक्ति को किसी शीलगुण पर न तो अधिक ऊँचा और न अधिक नीचा रखते हैं, बल्कि केन्द्र में रखने का प्रयास करते हैं। इस कारण भी व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण, धारणा या निर्णय व्यापकतात तथा पक्षपाती बन जाता है। (Blum & Naylor, 1984).

3. अव्यक्त व्यक्तित्व (Implicit personality): इसका अर्थ व्यक्ति का यह विश्वास है कि व्यक्तित्व किस प्रकार संगठित है अर्थात कौन सा शीलगुण किस शीलगुण से मेल खाता है। जैसे - जिस व्यक्ति को हम आकर्षक समझते हैं, उसे ओजस्वी (energetic) भी समझ सकते हैं। जिस व्यक्ति को हम दयालु समझते हैं, उसे ईमानदार भी समझ सकते हैं।

4. स्थिराकृतियाँ (Streotypes): प्रत्यक्षीकरण पर स्थिराकृतियों का भी प्रभाव पड़ता है। किसी दूसरे व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण करते समय, उसके सम्बंध में धारणा या निर्णय करते समय, हम स्थिराकृतियों से प्रभावित होते हैं। संज्ञानात्मक प्रक्रम का एक ऐसा पक्ष है, जो हमें किसी समूह के सदस्यों के बीच भिन्नताओं के प्रति व्यक्तियों अंधा बना देता है और हमारे निर्णय को गड़बड़ा देता है। रेजन (Razran), 1950 ने कॉलेज के छात्रों को 30 लड़कियों के चित्र दिखलाकर उन्हें पाँच बिन्दु मापक (Five point scale) पर मूल्यांकन करने के लिए कहा। उन्हें सुन्दरता, बुद्धि, चरित्र, अभिलाषा तथा मनोरंजन के शीलगुणों पर मूल्यांकन करने के लिए कहा गया। दो महीने बाद हर लड़की के चित्र के साथ उसका उपनाम (surname) लिख दिया गया और फिर प्रयोज्यों को शीलगुणों पर मूल्यांकन के लिए कहा गया। देखा गया कि उनका मूल्यांकन पहले से काफी भिन्न था। उनके निर्णय (judgment) पर उनकी स्थिराकृतियों का स्पष्ट प्रभाव देखा गया। इसी प्रकार थीबोट तथा रीकन (Thibaut & Reikon) 1955 तथा लुचिन्स (Luchins) 1957 के अध्ययनों से भी व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण या निर्णय पर स्थिराकृतियों का प्रभाव प्रमाणित होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यक्ति-प्रत्यक्षीकरण धारणा निर्माण (Impression formation) या निर्णय (judgement) पर प्रत्यक्षीकरणकर्ता (Perceiver) से सम्बंधित उपर्युक्त कई कारकों का प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण एक ही लक्ष्य - व्यक्ति (target person) का प्रत्यक्षीकरण भिन्न-2 प्रत्यक्षीकरणकर्ता भिन्न-2 रूपों में करते हैं तथा भिन्न-2 धारणा (Impression) बना लेते हैं।

— 0 —

सामाजिक संदर्भ में (Social context).